बी० ए० पार्ट - I
हिन्दी प्रतिष्ठा
प्रथम पत्र

प्रश्न कृष्ण काव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ?

अथवा

कृष्ण भक्तिधारा की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर हिन्दी कृष्ण भक्तिधारा का भक्ति कालीन साहित्य में स्थायी महत्व है। इस धारा के कवियों में सूरदास का महत्व अन्यतम है। कृष्ण भक्तिधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

1 कृष्ण लीला का वर्णन :- कृष्ण भक्तों ने लीला वर्णन के संदर्भ में श्रीमद्भागवद् एवं उपनिषदों का वर्णन किया है। श्री कृष्ण में एक ओर ज्ञान की पूर्णता है जो गीता में है, दूसरी ओर अनुराग की प्रतिष्ठा है जो श्रीमद्भागवद् में है और तीसरी ओर कर्मयोग की कुशलता है जो महाभारत में है। सचिदानन्द के आनन्द तत्व की वेगवती धारा कवियों के द्वारा ग्रहण की गई है जिससे इस धारा में माधुर्य की सृष्टि हुई। कृष्ण भक्त कवियों ने बालक कृष्ण, किशोर कृष्ण, युवा कृष्ण के विविध लीलाओं को अपना प्रतिपाद्य बनाया है। कृष्ण लीला, गायन अथवा श्रवण से भक्त को मुक्ति मिलती है।

नन्द दास ने इसे इस प्रकार स्पष्ट किया है

जो यह लीला चित दै सुनै - सुनावै।
प्रेमी भक्ति सो पावै, सबके चित भावै ॥

2 कथा- वस्तु में मौलिकता :-
सम्पूर्ण कृष्ण भक्ति

Scanned by TapScanner

काव्यों की प्रेरणा स्रोत, भागवद् पुराण है। परन्तु मध्यकालीन हिन्दी कृष्ण - भक्ति धारा के कवियों ने मौलिक उद्भावना के साथ कृष्ण भक्ति काव्यों की रचना की है। भागवद् के कृष्ण जहाँ पग - पग पर अलौकिक हैं, वहीं मध्यकालीन कवियों के कृष्ण में लौकिकता की प्रधानता है। समय एवं परिस्थिति के अनुकूल इन कवियों ने अपनी मौलिकता का विश्वसनीय परिचय अपनी रचनाओं में दिया है।

3. पात्र एवं चरित्र - चित्रण :-

कृष्ण भक्ति काव्य के पात्र प्रतीकात्मक हैं। कृष्ण सम्पूर्ण भावों के द्योतक हैं। अन्यपात्र क्रमशः इन भावों के प्रतीक हैं। राधा - माधुर्य भाव का प्रतीक, यशोदा - वात्सल्य भाव का प्रतीक, गोपियाँ - सख्य भाव का प्रतीक। राधा का प्रेमिका से भिन्न कोई भाव नहीं। माता यशोदा का वात्सल्य से रहित कोई भाव नहीं है प्रायः सबके चरित्र एक निश्चित भाव के प्रतीक हैं। जैसे - मोहन की मुरली कृष्ण की अह्लादिनी शक्ति का प्रतीक है।

4. प्रकृतिचित्रण :-

इस धारा के कवियों ने प्रकृति का सहज एवं आकर्षक चित्र किया है। वातावरण निर्माण के लिए इस धारा के कवियों ने प्रस्तुत विधान एवं उद्दीपन भाव के लिए प्रकृति का वर्णन किया है। कृष्ण - भक्ति काव्य के अन्तर्गत कोमल एवं उग्र प्रकृति का दर्शन होता है।

Scanned by TapScanner

5. **भक्ति भावना :-**

कृष्ण भक्त कवियों ने भक्ति रस को एक स्वतंत्र रस के रूप में ग्रहण किया है। जिसका स्थायी भाव भागवद् रति है। पात्रानुकूल इसमे क्रमशः वात्सल्य, सख्य और माधुर्य भाव में पूर्णाति होती है। वाल्लभाचार्य की पुष्टि मार्गीय भक्ति का अनुसरण करने वाले भक्तों के काव्य में नवधा भक्ति का दिग्दर्शन होता है। इन भक्तो ने स्वकीया भाव पर जोड़ देने के साथ - साथ परकीया भाव को अपनाया।

6. **काव्यरूप :-**

कृष्ण भक्ति काव्य मुक्तक काव्य के रूप में लिखा गया है। इस धारा के कवियों ने प्रबंध रचना की ओर ध्यान नहीं दिया है। मुक्तक रूप में लिपिबद्ध होने के बाद भी सूर विरचित सूरसागर में प्रबंधात्मकता विद्यमान है। भक्तों ने भगवान की लीला वर्णन के क्रम में गेय पद्यो की विचित्र सृष्टि कर मुक्तक का भंडार भरा है।

7. **रस योजना :-**

कृष्ण काव्य का प्रधान रस है - भक्ति रस जिसका पर्यवसान वात्सल्य, श्रृंगार एवं शान्त रस में होता है। रस की दृष्टि से कृष्ण काव्य सर्वोत्तम काव्य है। इस संदर्भ में वात्सल्य महत्वपूर्ण है वात्सल्य से पूर्ण एक पद्य द्रष्टव्य है -

देखो माई या बालक की बात,
वन उपवन, सरिता सर मोहे देख श्यामल गात॥

8. **शैली :-**

कृष्ण भक्ति काव्य में गीति काव्य की शैली अपनाई गई है। फाग लीला और

दान लीला आदि में खण्ड काव्य की-सी झलक प्राप्त होती है। संगीतात्मकता, भावात्मकता, वैयक्तिकता, कोमलकान्त, पदावली, एवं संक्षिप्तता से पूर्ण कृष्ण भक्तिधारा की गेय रचनाएँ हिन्दी की विशेष उपलब्धि है।

9. भाषा, छन्द एवं अलंकार :- कृष्ण काव्य में

परिष्कृत एवं परिमार्जित शुद्ध ब्रज भाषा प्रयुक्त हुई है। छन्दों में गेय पदों में प्रयुक्त होने वाले छन्दों के अतिरिक्त दोहा, चौपाई, रोला, हरीगीतिका आदि छन्दों का भी प्रयोग मिलता है। अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा का पग-पग पर दर्शन होता है। सादृश्य मूलक, विरोध मूलक आदि अलंकार इस धारा की रचनाओं में अधिक प्रयोग हुए हैं।